पृष्ठ : 04
स्थापित : 2008
संस्थापक: स्व. बी. शंकर
23 मई 2025, शुक्रवार
संपादक: गंगा असनोड़ा: 9412079290

सरोकारों से साक्षात्कार

रीजनल रिपोर्टर

श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड से प्रकाशित, साप्ताहिक आर.एन.आई.नं: UTTHIN/2008/24749, वर्ष: 16, अंक: 45, मूल्य: 10

चर्चा में है गढ़वाल विवि का मास कॉम विभाग

विभाग के निदेशक पर एसोसिएट प्रोफेसर ने लगाए उत्पीडन के आरोप

गंगा असनोड़ा

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के मास कम्युनिकेशन विभाग इन दिनों चर्चा में है। इस विभाग के निदेशक डा. सुधांशु जायसवाल पर पद के दुरूपयोग तथा अन्य तरीकों से मानसिक उत्पीड़न का आरोप विभाग में तैनात एसोसिएट प्रोफेसर ने लगाए हैं। अपनी शिकायत शिक्षिका डा.अमिता ने विवि अनुदान आयोग नई दिल्ली, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, विवि के कुलपति प्रो.एमएस रौथाण समेत विवि की आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) से भी की है।

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि के मास कॉम विभाग में तैनात निदेशक डा.सुधांशु जायसवाल अक्सर अपने विद्यार्थियों के बीच चर्चा का विषय बने रहे हैं। विद्यार्थियों की ओर से कथित रूप से उन पर कई तरह के आरोप फिजाओं में तैरते रहे हैं, लेकिन 32 वर्षो से गढ़वाल विवि में अपने पैर मजबूती से जमाए हुए एसोसिएट प्रोफेसर डा. सुधांशु जायसवाल की मनमानियों तथा उत्पीड़न के खिलाफ उन्हीं के विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डा. अमिता ने मोर्चा खोल लिया है।

इस तरह हो रहा संविदाकर्मियों का उत्पीड़न

मास कॉम विभाग में तैनात निदेशक की मनमानी का यह हाल है कि डा.अमिता को लिफ्ट देने पर वहां तैनात कैमरा संचालिका अरूणा रौथाण को नौकरी से हाथ धो देने की धमकी मिल गई है। अपनी इस धमकी को अमलीजामा पहनाने के लिए उन्होंने कुलपति तथा आउटसोर्स एजेंसी को अरुणा के खिलाफ शिकायती पत्र भेजे गए हैं। पत्र में यह कहा गया है कि उनके विभाग को कैमरा संचालक अरुणा की आवश्यकता नहीं है। डिजिटल युग में पत्रकारिता एवं जन संचार जैसे विभाग में कैमरा संचालक की जरूरत न होने की बात विभाग के निदेशक द्वारा कहा जाना आश्चर्यचकित करता है। यह घटना यह भी इशारा करती है कि 16 वर्षो से एक ही संस्थान में काम रहे कर्मी पर यदि विभाग का निदेशक का चाहे, तो एक पत्र लिखकर उसके रोजगार पर लात मार सकता है। यह घटना विभाग के निदेशक की मानमानी की ओर भी इशारा करती है। यह कहा जा सकता है कि 16 वर्षो से पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग में तैनात कर्मी अरुणा को बेवजह अपने अहं की संतुष्टि के लिए बलि का बकरा बनाया जा रहा है। अरुणा ने असिस्टेंट प्रोफेसर डा. हर्षवर्धनी एवं केंद्र निदेशक डा.सुधांशु जायसवाल पर अभद्रता के आरोप लगाए हैं, जिसकी लिखित शिकायत उन्होंने कुलपति से की है। असिस्टेंट प्रोफेसर डा.हर्षवर्धनी ने भी अरुणा पर अभद्रता के आरोप लगाए हैं, जबकि विभाग की ओर से अरुणा को समय-समय पर दिए गए चरित्र प्रमाण पत्रों में शालीन, शिष्ट तथा मेहनती कर्मी तथा उत्तम चरित्र की बताया गया है।

आंतरिक कमेटी ने किया तलब

आंतरिक कमेटी की अध्यक्ष प्रो. मोनिका गुप्ता ने कहा कि इस तरह का मामला आंतरिक कमेटी के पास पहली बार आया है, जिसमें एक ही विभाग के शिक्षक आपस में झगड़ रहे हों। उन्होंने कहा कि इस मामले में एक बार की सुनवाई हो गई है। सोमवार को पुनः इस मामले पर विभिन्न पक्षों की बात सुनी जाएगी। 90 दिन के भीतर यूजीसी को मामले की कार्रवाही के संदर्भ में जानकारी देनी होती है। अपनी कार्रवाही समर्थ पोर्टल से यूजीसी के लिए कमेटी नियत समय में भेज देगी।

ये हैं आरोप

13 सितंबर 2024 को नियुक्त हुई एसोसिएट प्रोफसर डा.अमिता ने आरोप लगाया है कि डा.सुधांशु जायसवाल उन्हें निरन्तर किसी न किसी तरह मानसिक प्रताड़ना दे रहे हैं। उन्होंने अपनी लिखित शिकायत में कहा है कि मार्च माह में पांच दिन के अवकाश में जाने पर उनका 50 प्रतिशत से अधिक वेतन काट दिया गया। हालांकि उनकी लिखित शिकायत के बाद 16 मई को काटे गए वेतन का भुगतान उन्हें कर दिया गया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया है कि डा.सुधांशु जायसवाल उनके कार्यो में अनावश्यक दखल, अन्य शिक्षक साथियों तथा स्टाफ पर यह दबाव बनाना कि डा.अमिता को किसी तरह का सहयोग न किया जाए, लगातार पीछा करते हैं तथा जहां खाना खाने जाती हूं, वहां भी पूछताछ करते पाया गया। इन आरोपों के संदर्भ में विभाग के निदेशक डा.सुधांशु का कहना है कि उन्होंने विवि की व्यवस्थाओं के अनुरूप एक सिस्टेम से कार्य किया है। अन्य आरोपों पर उन्होंने कुछ भी कहने से इंकार किया।

आंतरिक शिकायत समिति कर रही जांच

कुलपति प्रो.एम एस रौथाण ने कहा कि यह मामला उनके संज्ञान में है। डा.अमिता को उनके आवेदन पर अवकाश के लिए अप्रूवल दे दिया गया था। दोनों शिकायतों के मामले में आंतरिक शिकायत समिति जांच कर रही है। उनकी रिपोर्ट के आधार पर ही कार्रवाई की जाएगी।

आंतरिक शिकायत समिति कर रही जांच

सात वर्षो में आए छह मामले विवि सेक्सवल ह्रासमेट सेल की इंटरनल कंप्लेन कमेटी के पास बीते छह वर्षो में छह मामले दर्ज हुए हैं। जिसमें से वर्ष 2021 से 2024 तक कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है। हालांकि कोरोनाकाल यानि वर्ष 2020-21 में भी यहां एक शिकायत इंटरनल कंप्लेन कमेटी को मिली है।

इसके अलावा वर्ष 2017-18 में 02 मामले, वर्ष 2019-20 एवं 20-21 में एक-एक मामला तथा 2024-25 में अब तक दो मामले दर्ज हो चुके हैं। ये दोनों मामले पत्रकारिता एवं जन संचार केंद्र से जुड़े हुए हैं। ■■■

न्यायिक सेवा में भर्ती के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले से अभ्यर्थी सांसत में

भारती जोशी

न्यायपालिका में सेवा देने की इच्छा रखने वाले कानून स्नातकों के लिए, देश की सर्वोच्च अदालत ने स्पष्ट किया है कि न्यायिक सेवा में प्रवेश के लिए उम्मीदवार का कम से कम तीन वर्षो तक अधिवक्ता (वकील) के रूप में अभ्यास करना आवश्यक है। यह फैसला सुप्रीम कोर्ट ने ऑल इंडिया जजेज एसोसिएशन एवं अन्य बनाम भारत संघ एवं अन्य के ऐतिहासिक मामले की सुनवाई के दौरान सुनाया, चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सीजेआई) बीआर गवई, जस्टिस एजी मसीह और जस्टिस के विनोद चंद्रन की पीठ ने कहा कि, "एक न्यायिक अधिकारी को केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभव भी होना चाहिए, ताकि वह न्यायिक प्रक्रिया को सही ढंग से समझ सके और निष्पक्ष न्याय कर सके।" अदालत ने यह भी कहा कि, "न्यायिक पद पर बैठे व्यक्ति को कोर्ट की कार्यप्रणाली, बहस की शैली, साक्ष्य की प्रक्रिया और अधिवक्ताओं के दृष्टिकोण की समझ होनी चाहिए, जो केवल अदालत में वकालत के अनुभव से ही प्राप्त होती है।"

यह निर्णय देश के सभी उच्च न्यायालयों तथा राज्य सरकारों पर लागू होगा। प्रैक्टिस की अवधि अनंतिम नामांकन की तिथि से मानी जा सकती है। हालांकि, उक्त शर्त 20 मई से पहले हाईकोर्ट द्वारा शुरू की गई भर्ती प्रक्रिया पर लागू नहीं होगी। यह शर्त केवल भविष्य की भर्तियों पर लागू होगी।

उम्मीदवार उस न्यायालय के प्रधान न्यायिक अधिकारी या उस न्यायालय के किसी अधिवक्ता द्वारा प्रमाणित प्रमाण पत्र प्रस्तुत करेंगे जिसके पास कम से कम 10 साल का अनुभव हो और जो ऐसे जिले के प्रधान न्यायिक अधिकारी या ऐसे स्थान पर प्रधान न्यायिक अधिकारी द्वारा विधिवत समर्थित हो।

सुप्रीम कोर्ट ने जजों के 'लॉ कलर्क' के रूप में अनुभव ले रहे अभ्यर्थियों को तीन साल की प्रैक्टिस में गिने जाने की बात कही।

प्रतिभाओं का होता है हतोत्साहन

पूर्व में वर्ष 1993 में न्यायिक सेवाओं की नियुक्ति के लिए तीन वर्ष के कार्यानुभव को अनिवार्य शर्त के रूप में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर लागू किया गया लेकिन, 2002 में शेट्टी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि, ऐसे नियम प्रतिभाओं का हतोत्साहन करते हैं। तीन वर्ष की बाध्यता को हटाया जाना चाहिए। आयोग की सिफारिश पर इस बाध्यता को हटा दिया गया।

उच्च न्यायालयों तथा राज्य सरकारों के सुझाव

सुप्रीम कोर्ट द्वारा उच्च न्यायालयों तथा राज्य सरकारों से सुझाव मांगे गए, जिस पर छत्तीसगढ़ तथा सिक्किम को छोड़ अधिकतम राज्यों तथा उच्च न्यायालयों ने जज की नियुक्ति के लिए दो या तीन वर्ष के अनुभव को जरूरी बताया। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने कहा कि, "कुछ ऐसे मामले आए हैं जिनमें सिविल जज (जूनियर डिवीजन) बार के सदस्यों और कर्मियों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं और अधिकारियों को प्रक्रियात्मक मुद्दों का सामना करने पर कोर्ट को संभालना मुश्किल हो रहा है। इसलिए जज की नियुक्ति से पूर्व बार में कम से कम 2 साल का अनुभव होना चाहिए।

केरल, मध्यप्रदेश, मणिपुर समेत राज्य सरकारों तथा उच्च न्यायालयों ने वकीलों तथा वादियों के सामने आने वाली व्यवहारिक कठिनाईयों तथा चुनौतियों को समझने के लिए तीन साल की प्रैक्टिस की आवश्यकता को बहाल किए जाने का सुझाव दिया।

तैयारी कर रहे अभ्यर्थी दुविधा में

वर्षो से न्यायिक सेवाओं की तैयारी में जुटे अभ्यर्थी सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से आहत हुए हैं। इन अभ्यर्थियों का कहना है कि, सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय में सिर्फ विद्यार्थियों को कसौटी पर कसा गया है जबकि अकादमिक स्तर पर तथा कॉलेजो को यह बाध्यता की जानी चाहिए थी कि, लॉ का अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को प्रायोगिक तौर पर भी तैयार किया जाना चाहिए। ■■■

SUBSCRIBE

संपादकीय

मुखियाविहीन स्कूलों के दर्द में...

बीते दिनों उत्तराखंड के सुदूरवर्ती जिले चमोली के गोपेश्वर के पीएमश्री विद्यालय ग्वाड़ देवलधार के वार्षिकोत्सव समारोह में भरी महफिल के बीच एक शिक्षक ललित मोहन सती शिक्षकों की पीड़ा शिक्षा मंत्री डा.धन सिंह रावत के समझ उगल बैठे।

इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर जिस तरह प्रतिक्रियाएं मंत्री जी के शूरवीरों ने की, वह मंत्रीजी की चापलूसी के तौर पर तो ठीक लगती हैं, लेकिन एक सामान्य आम नागरिक की पीड़ा समझने के तौर पर देखा जाए, तो बेहद बचकानी और निंदनीय रही।

देहरादून में हिमालय बचाओ अभियान में पहुंचे सामाजिक एवं पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने अपना संदेश यह कहते हुए छोड़ा कि दलीय राजनीति में फंसे नेता तो सब हमाम में नंगों की तरह हैं, लेकिन जनता को समझना होगा कि उन्हें कब, कैसे और कितनी ताकत के साथ किस बात का विरोध करना है।

सोनम वांगचुक को सुनते हुए मुझे अनायास ही उक्त विद्यालय के शिक्षक ललित मोहन सती याद आ गए। उक्त मामले में प्रकरण क्यों हो रहा है की समीक्षा करने के बजाय विभाग ने ललित मोहन सती पर कार्रवाही का मन बनाया। हालांकि शिक्षक संगठन के प्रांतीय अध्यक्ष राम सिंह चौहान ने सोशल मीडिया पर दिए बयान से यह जगजाहिर किया है कि मंत्री जी ने शिक्षक ललित मोहन सती पर किसी भी तरह की कार्रवाही से इंकार किया है।

पूर्व में उत्तरा बहुगुणा पंत के साथ पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र रावत की छीछालेदार से सबक लेकर संभवतया मंत्रीजी ने यह निर्णय लिया हो। मंत्रीजी की चापलूसी करने में सिर्फ भाजपाई नेता ही शामिल नहीं रहे, बल्कि कई पत्रकार भी इस प्रकरण पर शिक्षक ललित मोहन सती को धिक्कारते दिखाई दिए। कई तो इस मामले में मंत्रीजी के धैर्य की दाद देना नहीं भूले। लेकिन मंत्रीजी को दाद तो तब मिले, जब वे इस प्रकरण की समीक्षा में यह समझने की कोशिश करें कि आखिर एक जागरूक शिक्षक को भरी सभा में ऐसा सब क्यों कहना पड़ा?

2024 में उत्तराखंड के 90 प्रतिशत विद्यालय प्रधानाचार्यो के रिटायरमेंट से प्रधानाचार्य विहीन या प्रभार पर हैं। 2025 में यह आंकड़ा संभवत: 95 प्रतिशत आ गया हो। ऐसे में शिक्षक ललित मोहन का वक्तव्य कैसे गलत हो सकता है। सेवा नियमावली के अनुसार, यदि शिक्षक ललित मोहन मंत्रीजी के पास जाकर अभद्रता करते, तो गलत बात थी, लेकिन जब मंत्रीजी उनके द्वार पर आए हैं, तो शिक्षकों तथा शिक्षा के हित में उनका ये बयान प्रोटोकॉल विहीन कैसे हो गया?

मंत्रजी, विभागीय अधिकारियों तथा उनके चापलूसों को यह समझना चाहिए कि मुखियाविहीन स्कूल आखिर कैसे संचालित होंगे? ■■■

रमेश गैरोला 'पहाड़ी' को मिला तृतीय भैरव दत्त धूलिया स्मृति पुरस्कार

अनुसूया प्रसाद मलासी

कर्मभूमि फाउंडेशन, उत्तराखंड की ओर से आयोजित एक समारोह में पत्रकारिता और समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए पंडित भैरवदत्त धूलिया तृतीय स्मृति पुरस्कार से वरिष्ठ पत्रकार रमेश गैरोला 'पहाड़ी' को नवाजा गया।

रविवार शाम आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि मौजूद विधानसभा अध्यक्ष, उत्तराखंड ऋतु भूषण खंडूड़ी के हाथों उनको शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया और प्रशस्ति-पत्र के साथ ही पुरस्कार स्वरूप एक लाख की धनराशि प्रदान की गई। इससे पूर्व, हिंदी फिल्म उद्योग के जाने-माने निर्माता एवं निर्देशक तिग्मांशु धूलिया ने पहाड़ी जी के सम्मान में प्रशस्ति-पत्र पढ़ा।

रमेश पहाड़ी उत्तराखंड के वरिष्ठतम पत्रकारों में से एक हैं, जो पांच दशकों से भी लंबे समय से जनपक्षीय पत्रकारिता में जुटे हुए हैं। वे पत्रकारिता के साथ ही एक एक्टिविस्ट, सामाजिक चिंतक और पर्यावरणवादी के रूप में भी समाज को लाभान्वित करते रहे।

चमोली गढ़वाल के पोखरी ब्लॉक के मूल निवासी पहाड़ी जी प्रख्यात पर्यावरणविद पद्मभूषण चंडी प्रसाद भट्ट के करीबी सहयोगी रहे हैं। गौरतलब है कि कर्मभूमि फाउंडेशन, उत्तराखंड ने फरवरी 2023 में निर्णय लिया था कि वह हर वर्ष पंडित भैरव दत्त धूलिया के नाम से 'पत्रकारिता पुरस्कार' से एक पत्रकार को सार्वजनिक समारोह में सम्मानित करेंगे। इस पुरस्कार का नाम 'पंडित भैरव दत्त धूलिया पत्रकार पुरस्कार' होगा। इस पुरस्कार में 1,000,00/- (एक लाख रुपए) की धनराशि, प्रशस्ति पत्र एवं शॉल भेंट किया जाएगा। हर वर्ष यह कार्यक्रम मई माह में आयोजित होगा।

इसी क्रम में इस वर्ष यह पुरस्कार उत्तराखंड की पत्रकारिता और जन आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले वरिष्ठ पत्रकार रमेश गैरोला 'पहाड़ी' को प्रदान किया गया।

यह सम्मान उन्हें कोटद्वार में आयोजित एक भव्य समारोह में उनकी दीर्घकालिक पत्रकारिता और सामाजिक संघर्षो में योगदान के लिए दिया गया।

रमेश गैरोला का जन्म चमोली जिले के पोखरी ब्लॉक के कैलब गांव में हुआ था। उन्होंने 1977 में 'अनिकेत' साप्ताहिक समाचार पत्र का संपादन शुरू किया, जो उत्तराखंड के सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को मजबूती से उठाने वाला एक प्रभावशाली मंच बना।

चिपको आंदोलन और राज्य आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले रमेश गैरोला 'पहाड़ी' न सिर्फ पत्रकारिता में सक्रिय रहे, बल्कि उत्तराखंड राज्य आंदोलन में भी उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। 80 के दशक में चिपको आंदोलन से जुड़े और बाद में उत्तराखंड राज्य आंदोलन के दौरान भी उन्होंने न केवल सड़कों पर उतरकर संघर्ष किया, बल्कि अपने लेखों और रिपोर्टो के माध्यम से जनमानस को जागरूक किया।

भैरव दत्त धूलिया उत्तराखंड के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में गिने जाते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई और कई वर्षो तक जेल में रहकर संघर्ष किया। वर्ष 1939 में उन्होंने अपने सहयोगी भक्त दर्शन सहित 'कर्मभूमि' साप्ताहिक समाचार पत्र की स्थापना की। इसके बाद वर्ष 1988 तक वह इस पत्र का स्वतंत्र रूप से संपादन करते रहे। ■■■

यात्रा वृत्तांत

पश्चिमी रामगंगा और गगास की स्रोत से संगम यात्रा हुई सम्पन्न

चारू तिवारी

हमारे अग्रज प्रो.शेखर पाठक के नेतृत्व में मई, 2024 को 'अस्कोट-आराकोट अभियान' की 50वीं वर्षगांठ पर हर दस साल बाद होने वाली यात्रा संपन्न हुई। संयोग से यह चिपको आंदोलन की भी पचासवीं वर्षगांठ है।

'पहाड़' द्वारा आयोजित की जाने वाली इस यात्रा को और विस्तार देते हुए इस बार कुछ नदियों की यात्रा पर विचार किया गया। इसे 'स्रोत से संगम' नाम दिया गया। इसमें हमारे साथी बची सिंह बिष्ट ने पहले ही नैनीताल की रामगाड़ नदी की यात्रा अपने साथियों के साथ की। गढ़वाल में डा.अरुण कुकसाल और डा.प्रेम बहुखंडी के नेतृत्व में पूर्वी और पश्चिमी नयार की यात्रा की गई।

यह तय हुआ था कि अपने क्षेत्र की तीन नदियों पश्चिमी रामगंगा, गगास और बिनो नदियों की यात्रा करेंगे। हमारे कुछ साथियों ने पश्चिमी रामगंगा की यात्रा की। हमने अपने साथियों के साथ गगास की यात्रा की। हमने इसे 'भटकोट से भिकियासैंण' नाम दिया था। हमने गगास के उद्गम 'निलरी फाल' (भटकोट के जलागम से गगास की कई जलधाराएं गगास नदी का उदगम बनाती हैं) से हमने 17 मई, 2025 को यह यात्रा शुरू की थी, जिसका समापन 20 मई, 2025 को भिकियासैंण में रामगंगा के साथ गगास के संगम के साथ हुआ।

गगास नदी की इस अध्ययन यात्रा में सहयोग करने वाले सभी साथियों का बहुत-बहुत आभार। यात्रा में हमारे सहयात्री रहे उत्तराखंड की प्रखर आवाज पीसी तिवारी, पूर्व विधायक पुष्पेश त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार हृदयेश जोशी, प्रखर आंदोलनकारी तुला सिंह तड़ियाल, मदन कठायत, प्रयागदत्त शर्मा, युवा आंदोलनकारी मनीष सुंदरियाल, हमारे पुराने आंदोलनों के साथी वीरेंद्र बजेठा, सामाजिक कार्यकर्ता दयाल पांडे, जनगायक बसंत उपाध्याय, सामाजिक कार्यकर्ता पवन तिवारी, युवा साथी सौरभ तिवारी, सामाजिक कार्यकर्ता मंसूर अहमद, नेगी जीय रंगकर्मी मनोहर अधिकारी, ग्राम प्रधान ऐराडी गोविंद अधिकारी, हमारे बाल सखा गिरीश बेलवाल, पर्यावरणविद् और जागरूक शिक्षक जमुना प्रसाद तिवारी 'कंटरमैन',

पर्यावरणविद् और शिक्षक डा. मोहन कांडपाल, प्रतिबद्ध शिक्षक गिरीश मठपाल, दीवान रौतेला, सामाजिक कार्यकर्ता और पूर्व शिक्षक जीवन अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता भूपाल सिंह भंडारी, रंगकर्मी हुकुम सिंह भंडारी गोविंद सिंह मेहता आदि रहे।

इस यात्रा की शुरुआत हमने राजकीय इंटर कालेज बिंता से की थी। मैं इसके लिए विद्यालय के विद्वान प्रधानाचार्य राजेंद्र कैड़ा, हमारे साथी और शिक्षक डा. पांगती, पांडे जी और पूरे विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त करता हूं। सबसे अधिक आभार छात्र-छात्राओं का जिन्होंने बहुत मनोयोग से हमारी यात्रा का मंतव्य समझा और बहुत सारी जिज्ञासाएं अपने सवालों के माध्यम से सामने रखी।

हमारा पहला पड़ाव बग्वालीपोखर के पास बासुलीसेरा के हाट गांम में रहा। इस गांव के हमारे अग्रज प्रेमसिंह बडेसी जी का बहुत आभार कि उन्होंने बहुत स्नेह से हमारे रहने की व्यवस्था की। हमारे बहुत प्रिय इंद्र सिंह बडेसी और सुमित बडेसी ने जिस तरह पूरी चीजों का प्रबंधन किया उसके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। अनुज प्रकाश, शंकर, पंकज, मुकेश ने जिस प्रेम और सम्मान से भोजन और अन्य चीजों का ध्यान रखा वह बताता है कि नई पीढ़ी में अपनी थातियों से कितना लगाव है।

क्रमश... ■■■

आपकी प्रतिक्रिया का हमें इंतजार है।
अपनी प्रतिक्रिया इस पते पर भेजें।
9412079290, 7037548484
regionalreporter81@gmail.com

श्री कम्यूनिकेशन के लिए गंगा असनोड़ा थपलियाल द्वारा 15 फालतू लाईन, समय साक्ष्य देहरादून से मुद्रित एवं 76, अपर बाजार श्रीनगर से प्रकाशित।
न्यायिक क्षेत्र : श्रीनगर गढ़वाल
संस्थापक संपादक : स्व. बी. शंकर
सलाहकार: वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली
संपादक : गंगा असनोड़ा थपलियाल
विशेष प्रतिनिधि : उमा घिल्डियाल
स्टेट ब्यूरो : भारती जोशी
विशेष प्रतिनिधि (गैरसैण) :
भैरव दत्त असनोड़ा

कार्यालय : श्री कम्यूनिकोशन 76, अपर बाजार, श्रीनगर गढ़वाल-246174
आर.एन.आई.न.-
UPHIN/1999/863

विकास के नाम पर सभी सरकारें कर रही गड़बड़ी :सोनम वांगचुक

त्रिलोचन भट्ट

पद्मविभूषण स्व.सुंदरलाल बहुगुणा की चौथी पुण्यतिथि पर आयोजित गोष्ठी में पहुंचे प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने विकास के नाम पर पहाड़ी राज्यों के साथ हो रही ठगी से सतर्क होने का आह्वान किया। इस मौके पर वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्ता बीना बिष्ट को 'हिमालय बचाओ अभियान' के बैनर तले आयोजित हिमालय प्रहरी- 2025 का सम्मान दिया गया।

इस मौके पर मुख्य वक्ता प्रख्यात वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, एक्टिविस्ट और पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक ने कहा कि, जो विकास जनता से पूछ कर किया जाना चाहिए था, वह कार्पोरेट के दबाव में किया जा रहा है। इसे रोकने के लिए इन राज्यों की जनता को संघर्ष के रास्ते पर आगे बढ़ना होगा।

उन्होंने कहा कि यह तर्कसंगत नहीं कि इस दल का किया हुआ ठीक है और उस दल का नहीं। इसलिए पहले अपने घर को ठीक कीजिए। गलत तो गलत है, वह चाहे अपने दल का किया हो या दूसरे दल का। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिमालयन विवि के कुलपति प्रो.राजेंद्र डोभाल ने किया।

इससे पूर्व उन्होंने शहीद स्मारक पर उत्तराखंड महिला मंच और उत्तराखंड इंसानियत मंच द्वारा आयोजित गोष्ठी में भी वक्तव्य दिया।

उन्होंने कहा कि सामरिक दृष्टि से चीन और पाकिस्तान से भारत की तुलना की जाए, तो भारत की स्थिति ज्यादा मजबूत है। युद्ध के साजो-सामान में तीनों लगभग बराबर हैं, लेकिन भारत के लद्दाख और उत्तराखंड जैसे सीमावर्ती क्षेत्र के नागरिक देश के प्रति समर्पित नागरिक हैं। जबकि पाकिस्तान का सीमावर्ती बलूचिस्तान और चीन का तिब्बत हमेशा विद्रोह की स्थिति में रहते हैं। इसके बावजूद भारत की सरकार लद्दाख और उत्तराखंड के नागरिकों की उपेक्षा कर रही है, जो ठीक नहीं है।

सोनम वांगचुक ने कहा कि केंद्र सरकार ने जब जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाई थी और लद्दाख को केंद्र शासित राज्य बनाया था, तो लद्दाख के लोगों को लगा कि इससे उनका विकास होगा। इस उम्मीद के साथ उन्होंने लोकसभा चुनाव में बीजेपी को वोट दिया, लेकिन जब केंद्र शासित राज्य बनाने का जश्न खत्म हुआ, तब पता चला कि यह तो लद्दाख के लोगों के साथ धोखा है, क्योंकि अब इस क्षेत्र का कोई प्रतिनिधि लोकसभा या विधानसभा में नहीं होगा। ■■■

हेमंत पांडे बनाएंगे शिकारी लखपत पर फिल्म

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

गैरसैंण नगर के ग्वाड़ मल्ला निवासी पूर्व सेवानिवृत्त शिक्षक एवं प्रसिद्ध शिकारी लखपत रावत पर प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता हेमंत पांडे फिल्म बनाने जा रहे हैं। फिल्म निर्माण के लिए दोनों पार्टियों में करार भी हो चुका है। जल्द ही फिल्म की शूटिंग भी प्रारंभ हो जायेगी। इस फिल्म के डायरेक्टर मुंबई के भुवन टम्टा होंगे।

गैरसैंण नगर पंचायत के ग्वाड़ मल्ला निवासी पूर्व शिक्षक एवं गैरसैंण के पूर्व उपखंड शिक्षा अधिकारी रहे लखपत सिंह रावत ने वर्ष 2001 के दौरान आदिबदरी क्षेत्र में 16 स्कूली बच्चों को निवाला बनाने वाले दहशत का पर्याय बने आदमखोर गुलदार को ढेर कर दिया। यहां से शुरू हुई शिकारी लखपत की यह यात्रा आज तक 55 नरभक्षियों के खात्मे तक पहुंच चुकी है। उनके अनुभव बेहद रोचक हैं, जो फिल्म को महत्त्वपूर्ण बनाने में अंजाम देंगे। ■■■

कालिंदी फाउंडेशन की पहल पर किया 40 यूनिट रक्तदान

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

कालिंदी फाउंडेशन द्वारा हेल्थ सेंटर, बिरला कैंपस में एक रक्तदान शिविर का आयोजन कर 40 यूनिट रक्तदान किया गया। फाउंडेशन के सदस्य श्री वीरेन्द्र बिष्ट के निर्देशन में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनमोहन सिंह रौथाण के रक्तदान के साथ शिविर का शुभारंभ हुआ।

शिविर में प्रमुख रूप से रक्तदान करने वाले छात्रों में प्रियंका नेगी, लकी भंडारी, ज्योति नेगी, दिव्या पंत, विजय प्रकाश प्रजापति (पीएचडी शोधार्थी), दिव्या एनवी (पीएचडी शोधार्थी) और हर्षित मेहता शामिल रहे। शिविर के आयोजन में आयुष मियां, अंकित रावत, राजा बिष्ट और पुनीत अग्रवाल का विशेष योगदान रहा। ■■■

एस.पी. ममगाईं को 'नाट्य सम्राट सम्मान'

मेघदूत नाट्य संस्था के संस्थापक और प्रसिद्ध रंगकर्मी एस. पी.ममगाई को छह दशक से अधिक की रंगकर्म साधना और नाट्य निर्देशन, लेखन तथा अभिनय के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री सनातन धर्म सभा, गीता भवन देहरादून में नाट्य सम्राट अलंकरण से विभूषित किया गया।

एस.पी.ममगाई को यह सम्मान मानस मर्मज्ञ मैथिलीशरण के हाथों प्रदान किया गया। सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष राकेश ओबेरॉय, सचिव विपिन नागलिया और गुलशन खुराना भी इस अवसर पर मौजूद रहे।

श्री सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष राकेश ओबेरॉय ने रंगकर्म के क्षेत्र में एस.पी.ममगाई के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि वे पिछले छह दशक से अधिक लम्बे समय से रंगकर्म की साधना में संलग्न हैं और उत्कृष्ट नाट्य परम्परा के संवाहक के रूप में लोकरंजन के सिद्धहस्त निर्देशक और उच्च कोटि के कलाकार हैं।

मेघदूत नाट्य संस्था के जरिए एस.पी.ममगाई ने सैकड़ों युवाओं को रंगकर्म में पारंगत कर बड़े मुकाम तक पहुंचाया है।

मेघदूत नाट्य संस्था द्वारा अभी हाल में उत्तराखंड की अमर प्रेम कथा 'अमर तिलोगा' का मंचन टाऊन हॉल में किया और उससे पूर्व गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस के सुंदर कांड प्रसंग पर आधारित 'भय बिनु होई न प्रीत' का मंचन भी किया गया।

उक्त दोनों नाटकों को दूरदर्शन ने भी प्रसारित किया था। इस अवसर पर मेघदूत के प्रसिद्ध कलाकार नंदकिशोर त्रिपाठी, विजय डबराल, सपना गुलाटी, सावित्री उनियाल समेत कई लोग मौजूद रहे। ■■■

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए योगाभ्यास

अरुण मिश्रा

विकासखंड नारायणबगड़ में 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के क्रम में विकासखंड स्तरीय योगाभ्यास का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 'मानव श्रृंखला' का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ खंड विकास अधिकारी श्री वीरेंद्र असवाल द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य योग के महत्व को बढ़ावा देना और लोगों को योग के प्रति जागरूक करना है। मानव श्रृंखला के माध्यम से लोगों को योग के प्रति एकजुट करने का प्रयास किया गया।

इस दौरान डॉ. प्रीती वर्मा (नोडल अधिकारी), डॉ. दीप्ती नेगी, डॉ. गौरव डिमरी, भूपेंद्र पवांर, अमित खंडूरी, नरेंद्र बिष्ट, दर्शन सिंह, कपिल, ममता, बबीता आदि कर्मी उपस्थित रहे। ■■■

ग्रीष्मकाल के लिए खुले मदमहेश्वर के कपाट

लक्ष्मण सिंह नेगी

पंच केदारों में द्वितीय केदार के नाम से विश्वविख्यात व सुरम्य मखमली बुग्यालों के मध्य बसे भगवान मदमहेश्वर के कपाट 21 मई को छह माह के लिए खोल दिए गए हैं।

वेद ऋचाओं व मंत्रोच्चारण तथा सैकड़ों भक्तों की मौजूदगी में कपाट खुलने पर 667 तीर्थ यात्री मौजूद रहे। कपाट खुलने के साक्षी बने शिव भक्तों ने पूजा - अर्चना व जलाभिषेक कर विश्व शान्ति व समृद्धि की कामना की।

भगवान मदमहेश्वर के कपाट खुलते ही यात्रा पड़ावों पर रौनक लौटने लगी है। बुधवार को ब्रह्म बेला पर गौण्डार गाँव में मदमहेश्वर धाम के प्रधान पुजारी शिव लिंग ने पंचाग पूजन के तहत अनेक पूजायें संपन्न कर भगवान मदमहेश्वर सहित तैंतीस कोटी देवी-देवताओं का आवाह्न किया। ठीक प्रातः 5 बजे भगवान मद्महेश्वर की चल विग्रह उत्सव डोली का भव्य श्रृंगार कर आरती उतारी तथा भगवान मदमहेश्वर की चल विग्रह उत्सव डोली गौण्डार गाँव से कैलाश के लिए रवाना हुई। ■■■

सामान्य ज्ञान परीक्षा में 181 विद्यार्थियों ने किया प्रतिभाग

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

विद्यार्थियों में नियमित स्कूली पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के विषय में जानकारी और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से भगवती मैमोरियल सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल, श्रीकोट में विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष प्रो.एस.एस.रावत के संयोजन में सामान्य ज्ञान परीक्षा आयोजित की गई। यह परीक्षा प्राइमरी, जूनियर एवं सीनियर तीन पृथक-पृथक वर्गों में आयोजित की गई। उत्तराखण्ड की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित परीक्षा प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। इनके अलावा पर्यावरण और महिलाओं के सशक्तिकरण विषयों से सम्बंधित राष्ट्रीय स्तर की जानकारियों को भी सम्मिलित किया गया।

सामान्य ज्ञान परीक्षा में तीनों वर्गों से कुल 184 छात्र-छात्राएं पंजीकृत हुए, जिसमें 181 विद्यार्थी सम्मिलित हुए । परीक्षा के सफल आयोजन और संचालन में विद्यालय के प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष प्रो.एस.एस.रावत, बृजेश भट्ट, डा.योगेन्द्र कांडपाल, प्रधानाचार्य प्रभा बहुगुणा तथा विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं व अन्य कर्मियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ■■■

Classified Advertisement

I **RAJENDRA PRASAD RATURI** hereby notifies that my name mentioned in my ward's (AKSHAY RATURI) Statement of Marks and Pass Certificate **(UID 6462441)** issued by C.I.S.C.E. is RAJENDRA PRASHAD RATURI, which is incorrect, My correct name is **RAJENDRA PRASAD RATURI** and I shall be known by this name for all future purposes.

Inverters & Batteries UPS

G-Tech Power Systems

8126593939, 9412033244

जी.जी.आई.सी. मार्ग श्रीनगर (गढ़वाल)

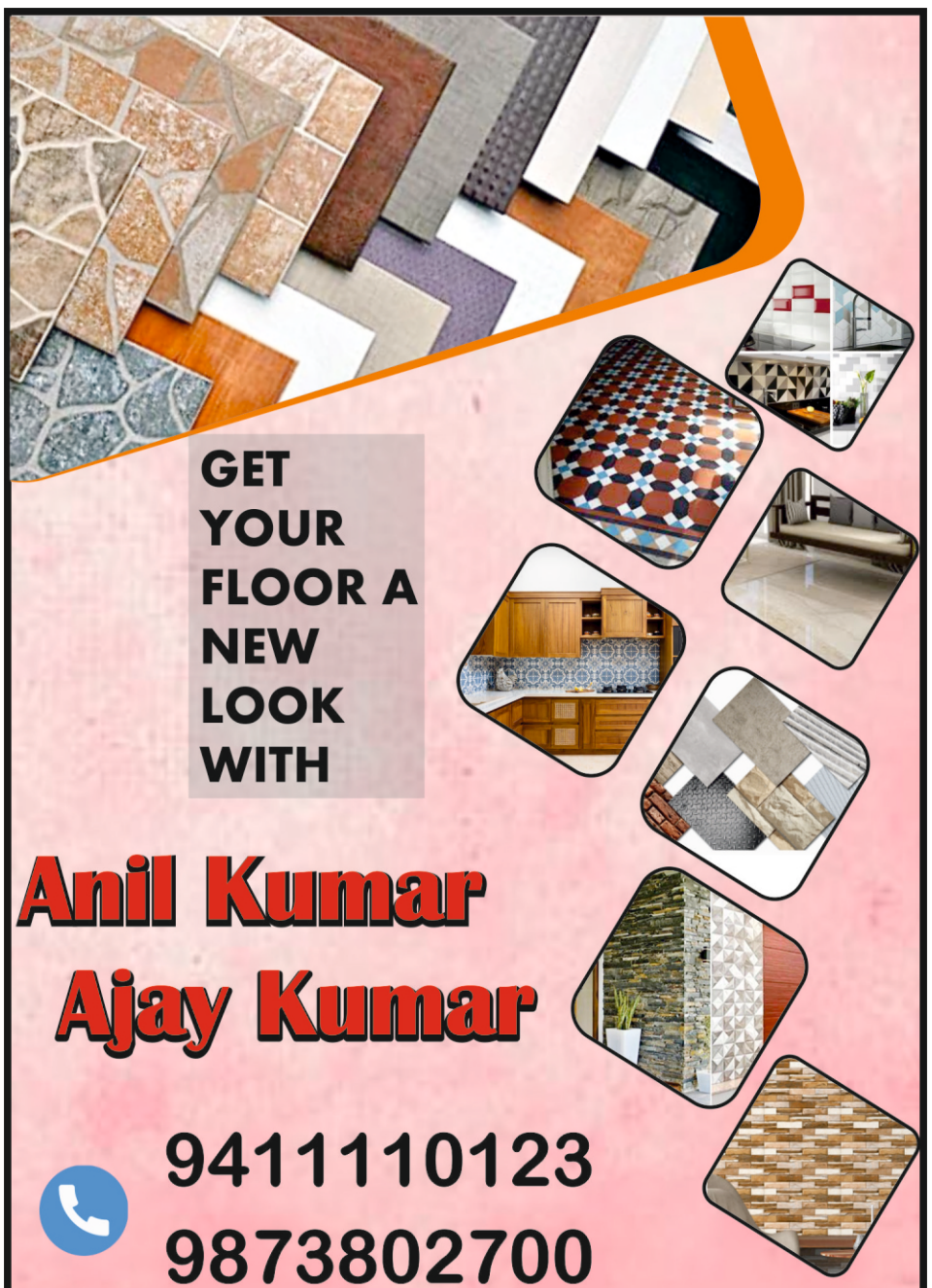

GET YOUR FLOOR A NEW LOOK WITH

Anil Kumar
Ajay Kumar

9411110123
9873802700

Ganesh Bazar Srinagar Garhwal, Uttrakhand 246174

SHEMFORD Futuristic School
Srinagar Garhwal

ADMISSION OPEN FOR 2025

Grade Nursery To 12th (registration also open for grade 11th)

More Information
9568450335
srinagar@shemford.com

Scan for the admission form

OUR FEATURES

- ★ Engaging teaching methods
- ★ Uniquely mapped curriculum
- ★ Life-Skill based programme
- ★ Personality and thinking skills development module

Affiliated To CBSE, New Delhi To Senior Secondary Level, A Unit Of Shemford And Shemrock Group Of Schools, New Delhi